खण्ड-10, अंक-1, वर्ष-2022, मु0प्र0 205-206
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v10i1.38
SJIF (2021) : 7.247

Story of Civilization-Brief Book Review in the perception of excellence of Indian Civilization

Rajiva Dixit
Department of Mathematics, B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226 001, U.P., India
dixit.rajiva@gmail.com

Received: 31-08-2022, Accepted: 01-10-2022

Abstract- This article is an attempt to review the book named "The Story of Civilization" in which the Indian Civilization has given the maximum gift and knowledge to the west world for the inventions of many scientific thing which has changed the living standard and behaviour of the society.

Key words- Lunar Water, Hindu Philosophy, Textile Industry, Democratic System, Panchayat Vyavastha, Hydraulic Engineering

स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन–भारतीय सभ्यता की उत्कृष्टता के परिप्रेक्ष्य में संक्षिप्त पुस्तक समीक्षा

राजीव दीक्षित
गणित विभाग, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226 001, उ0प्र0, भारत
dixit.rajiva@gmail.com

सार– प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक विलडूरंड ने अपनी पुस्तक "द स्टोरी ऑफ सिविलाईजेशन"[1] में लिखा कि भारत की सभ्यता ने पश्चिम को बहुत उपहार दिये हैं। भारत ने बहुत से ऐसे आविष्कार किए हैं जिसने पूरे संसार के रहन–सहन को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया।

बीज शब्द– लूनर वाटर, हिन्दू दर्शन, टेक्सटाइल उद्योग, लोकतांत्रिक व्यवस्था, पंचायत व्यवस्था, हाइड्रॉलिक अभियांत्रिकी।

संक्षिप्त पुस्तक समीक्षा

इस पुस्तक में भारत की सभ्यता तथा उसके योगदान को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत आच्छादित करते हुए संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

1. **अंक पद्धति**– सम्पूर्ण विश्व को अंक पद्धति का ज्ञान भारत से प्राप्त हुआ। परन्तु वर्तमान अंक पद्धति को कुछ विद्वान अरब से आया हुआ समझते हैं जबकि शून्य सहित दशमलव अंक पद्धति का उद्भव सर्वप्रथम भारत में हुआ तत्पश्चात् वह भारत से अरब पहुंचा और वहाँ से यूरोप में पहुंचा।

2. **कार्बराइज्ड स्टील**– महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा कि भारत ने अत्यधिक आविष्कार किये हैं, बिना उनके अध्ययन के विज्ञान या गणित को आगे बढ़ाना संभव नहीं था। तत्कालीन गणित का विकास भारत में ही हुआ था। बहुत से सिद्धांतों की उत्पत्ति भारत में हुई थी जैसे कि कार्बराइज्ड स्टील की उत्पत्ति का सिद्धांत भी भारत से प्राप्त हुआ था। बहुत सी पुरानी सभ्यताएं जैसे ग्रीस एवं रोम आदि भारत के प्रतिपादित सिद्धांतों से अचंभित थे। भारत द्वारा इस स्टील का महत्तम उत्पादन होता था। यहाँ तक कि सिकन्दर और पोरस ने स्टील को गोल्ड और सिल्वर की अपेक्षा प्राथमिकता दी, जो कि आज भी किसी देश के इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में महत्वपूर्ण है।

3. **हिन्दू दर्शन**– भारत में हिन्दू धर्मान्तर्गत दर्शन का अत्यधिक महत्व है जिसने पाश्चात्य दर्शन को भी प्रभावित किया। ग्रीक और रोम की सभ्यताएं भारत द्वारा विशेष रूप से प्रभावित थीं, जिसमें टाउन प्लानिंग महत्वपूर्ण था। व्यापार का भी ज्ञान भारत में था जो कि तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय के वैदिक संरचना में स्पष्ट वर्णित है। यहाँ तक कि पाइथागोरस ने भारत का भ्रमण कर सिद्धांत प्रतिपादन में इस योगदान का उल्लेख किया है।

4. **टेक्सटाइल इंडस्ट्री**– भारत द्वारा ही सर्वप्रथम टेक्सटाइल के क्षेत्र में कपास से निर्मित धागों का प्रयोग कर कपड़ों को बनाया गया जिसका प्रभाव पाश्चात्य देशों में पूर्ण रूप से पड़ा और उन्होंने कपड़ों को विभिन्न डिजाइनों में निर्मित कर विश्व में फैशन डिजाइनिंग की क्रांति ला दी।

5. **लोकतांत्रिक एवं पंचायत व्यवस्था**– भारत में पुरातन लोकतंत्र की स्थापना का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया था जिसमें पाँच लोग (पंचायत एवं सरपंच) नेतृत्व करते हुए निर्णय लेने की क्षमता रखते थे और इस व्यवस्था को विश्व द्वारा ग्रहण किया गया। ज्ञातव्य है कि 600बीसी में वैशाली की लोकतंत्र व्यवस्था पूर्णरूपेण स्थापित थी। विज्ञान के क्षेत्र में भारत को ऋषियों व आचार्यों द्वारा यह पहले ही बता दिया गया था कि चंद्रमा एक शीतल, शुष्क धरातल वाला क्षेत्र है जिसकी दूरी की गणना भारत में पूर्व में ही की जा चुकी थीं। नासा के निदेशक ने इस बात की पुष्टि भी की थी कि भारत के इन काल की गणना से ही प्रयोग कर ही हम स्पेस में आगे बढ़ सके हैं।

6. **भारतीय राजनीतिक चिन्तन**– भारतीय राजनीतिक चिन्तन में शुक्रनाम वस्तुतः एक विशेष परम्परा को व्यक्त कर अपनी नीति निर्धारण के सिद्धांत को प्रतिपादित करता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के बाद इसकी शुक्रनीति का नाम दिया गया। इस युद्ध नीति के साथ 20 अन्य नीतियों का निर्धारण किया गया जो कि प्राचीन भारतीय कलाओं जैसे संगीत, नृत्य, वाद्य, अलंकार, केश धारण, भोजन, मिश्रित धातुओं आदि को सुव्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करती। सब मिलकर हम कह सकते हैं कि वर्तमान में हो रहे विकास जो कि वैज्ञानिक दृष्टि से तर्क संगत है, पुरातन भारतीय परंपरा और ज्ञान में निहित थे।

7. **क्वांटम स्टेटिस्टिक्स**– भारत के चारों वेदों में क्वांटम स्टेटिस्टिक्स के बारे में संपूर्ण अध्ययन कर रखा था। उपनिशद में इसका संपूर्ण वर्णन है। भारतीय बंगाली वैज्ञानिक प्रो0 एस0 एन0 बोस ने इसका अध्ययन कर अपनी बोस थ्योरी प्रतिपादित की और "बोजॉन्स" नाम के कणों की उत्पत्ति का संदर्भ भी इन्हीं के द्वारा प्रतिपादित किया गया था जो कि बाद में पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा सिद्ध किये गये।

8. **चंद्रमा पर जल**– लूनर वाटर की खोज भारत द्वारा ही की गई थी। 2008 और 2009 में भारत द्वारा भेजे गये चंद्रयान द्वारा पता लगाया गया कि चंद्रमा की सतह पर पानी उपस्थित है[6] जिसका उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होता है। जैसा कि नासा मून मिनरोलॉजी मैपर[5] द्वारा चंद्रमा की सतह पर पानी की उपस्थिति बताई गई।[3] नासा के निदेशक जिमग्रीन ने अपने वक्तव्य में इसरो का धन्यवाद भी व्यक्त किया कि इस खोज की उत्पत्ति का पूरा श्रेय इसरो और भारतीय ज्ञान को जाता है क्योंकि नासा[4] ने पहले चंद्रमा को शुष्क सतह और ढेर सारी चट्टानों वाला ग्रह समझा था।

9. **गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत**– गणितज्ञ पीटर जॉनसन ने कहा कि गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का ज्ञान भारतीयों को इसकी खोज अर्थात् सर आइजक न्यूटन के जन्म के पूर्व ही था। शरीर की धमनियों में रक्त प्रवाह का भारतीयों को पूर्ण ज्ञान था। भारतीयों को इस बात का भी ज्ञान था कि शव का पैर दक्षिण में क्यो होना चाहिए जो कि रक्त प्रवाह ज्ञान को प्रतिपादित करता है।

10. **वायरलेस तकनीक**– सन् 1895 में भारतीय वैज्ञानिक जे0 सी0 बोस ने वायरलेस तकनीक का सबसे पहले ही प्रयोग किया और उन्होंने लगभग 11मील की दूरी पर रेडियो मैग्नेटिक सिग्नल भेजकर उनको रिसीवर द्वारा सुनवाया गया। शून्य की खोज भी भारतीयों ने प्राचीनतम समय में कर ली थी तथा इसके गणितीय प्रयोग को सर्वप्रथम आर्यभट्ट ने विश्व के सामने रखा। शून्य का उपयोग आज मोबाइल डिवाइस, कम्प्यूटर आदि में किया जा रहा है जो इसी परिकल्पना का एक प्रयोग है।

11. **हाइड्रॉलिक इंजीनियरिंग**– हाइड्रॉलिक इंजीनियरिंग का इण्डसवैली सभ्यता के पाये गये पुराने अवशेषों में स्पष्ट दिखाई देता है जिसमें साफ–सफाई की दुरुस्त व्यवस्था थी और शहर योजना की यह सभ्यता महत्वपूर्ण अंग थी। इसी के आधार पर आज महत्वपूर्ण शहरों को विकसित किया जा रहा है।

निष्कर्ष– उपरोक्त बिन्दुओं के अंतर्गत की गई चर्चा से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित हो रहे विकास के पीछे भारतीय पुरातन सभ्यता का विशेष योगदान है जो उत्कृष्ट है तथा इसे और समझाने हेतु निरंतर शोध की आवश्यकता है।

References

1. Durant, Will (1993) The Story of Civilization, Fine Publication, USA.
2. Phouc, Le Huen (210) Buddhist Architecture, Grafik of Page 50.
3. Lunar water of NASA
4. nasa.gov., 7 June 2013 retreived 2015-05-25
5. Lucey, Paul G. (23 Oct. 2009) A Lunar water world, Science, vol. 326, no. 5952, pp. 531-32.
6. Pieteus, C. M.; Goswami, J. N. and Clark, R. N. (2009) Character and Spatial Distribution of OH/H2O on the Surface of the Moon Seen by M3 on Chandrayaan-1, Science, vol. 326, no. 5952, pp. 568-572.